Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.III/April; 12pp.1-4 डॉ. श्रीमती मंजू पांडेय ISSN:-2230-7850

Research Papers

"मुंगेली नगरीय उपांत क्षेत्र में अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास का अध्ययन"

डॉ. श्रीमती मंजू पांडेय
सहायक प्राध्यापक भूगोल
शा. जे. पी. वर्मा. स्नातकोत्तर कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना :–

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले की सबसे प्राचीन तहसील मुंगेली 12 जनवरी 2012 को जिले में परिवर्तित हो चुकी है। सोयाबीन, चना एवं धान उत्पादन में अग्रणी होने बाद भी यह क्षेत्र आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है। यहां बड़े उद्योग धंधों का अभाव है। यहां की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि प्रधान है। अतः यहां उद्योग धंधों की असीम संभावनाये है। लेकिन इसके विपरीत स्थानीय मजदूर जो भूमिहीन व सीमांत कृषक है। ये अक्टूबर से जून तक भोपाल, दिल्ली, जम्मू–काश्मीर, इलाहाबाद, कानपुर, आदि स्थानों में ईटा भट्टा तथा भवन निर्माण कार्य हेतु पलायन करते है। जिनसे इन्हें तत्कालिक रोजगार तथा कर्जमुक्ति भले ही मिलती हो लेकिन इनका सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्यगत शोषण होता है तथा ग्रामीण क्षेत्र में कृषि श्रमिक की समस्या बढ़ती जा रही है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी समस्या की ओर एक ध्यानाकर्षण है।

प्राचीन काल से ही मनष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु स्थान परिवर्तित करता रहा है। यह निरंतरता विभिन्न रूपों में आज भी जारी है। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के लिए, पढ़े–लिखे नौकरी के लिए, बेरोजगार काम की तलाश में तथा कृषक या खेतीहर मजदूर कृषि कार्य समाप्ति पर चार माह के लिए ही अन्य कार्यो की तलाश में नगर या महानगर की ओर पलायन करते है। ये मजदूर अधिकांशतः अपने बाल–बच्चों तथा आश्रितों को साथ लेकर जीविकोपार्जन के लिए पलायन करते है। यह अस्थायी अल्पकालिक प्रवजन होता है।

इस अल्पकालिक का प्रवास का श्रमिकों के स्वास्थय तथा आर्थिक सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है साथ ही जिस क्षेत्र से प्रवास हुआ है वहां की कृषि तथा ग्रामीण संरचना भी प्रभावित होती है। ग्रामीण श्रमिक विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त होते है। जैसे– ऋणग्रस्तता, अल्परोजगार, मौसमी रोजगार आदि। इन सभी समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में मुंगेली क्षेत्र के श्रमिकों का अल्पकालिक प्रवास पर अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :– प्रस्तुत अध्ययन हेतु मुंगेली नगरीय उपांत को लिया गया है। मुंगेली नगर बिलासपुर से मुख्य सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है। जो लगभग 45 कि.मी. की दूरी पर है। यह क्षेत्र आज भी रेलमार्ग से नहीं जुड़ा है। जिससे यहां औद्योगिक विकास नहीं हो पाया है।

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र के मजदूरों में प्रवास के कारणों का पता लगाना, उसके प्रभाव को मूल्यांकित करना, प्रवास करने वाले श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना तथा प्रवास रोकने हेतु सरकारी गैर – सरकारी संगठनों के प्रयास के जानकारी व्यक्तिगत रूप से सर्वे द्वारा प्राप्त करना है।

विधि तंत्र :– मुंगेली नगरीय उपांत के ग्रामीण क्षेत्रों से ऐसे 50 व्यक्तियों का चयन अध्ययन हेतु किया गया जो वर्श में कम से कम दो बार अल्पकालिक प्रवास पर जाते है। इनका (पुरूशों) चयन यादृच्छिक प्रतिचयन (त्दकवउ उचसपदह) विधि द्वारा किया गया है। इस हेतु प्रश्नावली के माध्यम से व्यक्तिगत सर्वेक्षण द्वारा जानकारी प्राप्त की गई है। कुछ सामान्य जानकारी ग्रामीण जनप्रतिनिधियों द्वारा भी प्राप्त की गई है।

आयु संरचना :– बच्चों व बुजुर्गो की अपेक्षा किशोर व पौढ़ों में सीखने की क्षमता, कार्यकुशलता, व सामाजिक परिपक्वता की मात्रा अत्यधिक होती है। यही वे पहिये भी होते है जिन पर घर गृहस्थी तथा समाज की जिम्मेदारी भी अधिक होती है। आर्थिक अनिश्चितता की स्थिति में यही वर्ग सर्वाधिक प्रवास करता है।

सारणी क्रं. – 1
उत्तरदाताओं की आयु संरचना

क्रं.	आयु–समूह	व्यक्तियों की संख्या	प्रतिशत
1	20–25 वर्ष	8	16
2	25–30	15	30
3	30–35	18	36
4	35–40	5	10
5	40–45	3	6
6	45 से अधिक	1	2
	योग	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 25–35 का वर्ग ही सर्वाधिक मात्रा में (66:) प्रवा सित हुआ है। 35 वर्ष से अधिक आयु के केवल 18:

Please cite this Article as : *डॉ. श्रीमती मंजू पांडेय*, *"मुंगेली नगरीय उपांत क्षेत्र में अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास का अध्ययन"* : Indian Streams Research Journal (April ; 2012)

व्यक्ति ही रोजगार हेतु प्रवास किये है। जबकि 20–25 के युवा में 16ः व्यक्ति का प्रवास हुआ है। अर्थात् पारिवारिक जिम्मेदारी के बढ़ते ही रोजगार हेतु प्रवास बढ़ता है तथा बढ़ती उम्र में कार्यक्षमता की कमी आदि से प्रवास में कमी आती है। अध्ययन क्षेत्र के सभी पुरूष प्रवास के समय अपने परिवार के साथ ही जाते है।

जाति संरचना :– अध्ययन हेतु चुने गए पुरूषों में लगभग सभी जाति वर्ग सम्मिलित है।

सारणी क्रं. – 2

उत्तरदाताओं की जाति संरचना

क्रं.	जति	व्यक्तियों की संख्या	प्रतिशत
1	अनु.जाति	19	38
2	अनु. जनजाति	6	12
3	अन्य पिछड़ा वर्ग	20	40
4	सामान्य	5	10
	योग	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि अनुसूचित जातियां तथा अन्य पिछड़ा वर्ग (नाई, तेली, कुर्मी, लोधी, मरार, यादव आदि) जो कि कृषि मजदूर के रूप में कार्य करते है। अधिक प्रवास करते है। अनुसूचित जनजाति के श्रमिकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। विभिन्न प्रकार की सरकारी योजनाएं भी इस हेतु सहायक है।

शैक्षिक स्वरूप :– अल्पकालिक प्रवास में शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट है उच्च शिक्षित व्यक्ति गरीबी के बाद भी मजदूरी हेतु प्रवास बहुत कम करते है। जबकि कम पढ़े लिखे व्यक्ति सपरिवार आसानी से महानगरों की ओर प्रवास कर जाते है।

सारणी क्रं. – 3

उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्वरूप

क्रं.	शिक्षा का स्तर	व्यक्तियों की संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	21	42
2	प्राथमिक	18	36
3	पूर्व माध्यमिक	6	12
4	उच्चतर माध्यमिक	5	10
5	अन्य उच्च	00	00
	योग	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि अधिकांशतः वे ही श्रमिक पलायन की ओर उन्मुख होते है जो अशिक्षित या कम शिक्षित होते है। इस क्षेत्र के श्रमिकों में एक से अधिक बार बाहर जाने की प्रवृत्ति है। वर्ष में दो बार बाहर जाने वाले लगभग 45ः मजदूर है। तीन बार बाहर जाने वाले 21ः मजदूर है।

कृषि भूमि का स्वरूप :– अल्पकालिक प्रवास प्रायः भूमिहीन मजदूर ही करते है। कुछ मात्रा में अल्पभूमि वाले कृषक भी प्रवास करते है। किन्तु 5 एकड़ या उससे अधिक भूमि के बड़े कृषक प्रवास नहीं करते है।

सारणी क्र. – 4

उत्तरदाताओं की कृषि भूमि का स्वरूप

क्रं.	भूमि एकड़ में	व्यक्तियों की संख्या	प्रतिशत
1	भूमिहीन	24	48
2	एक एकड़	16	32
3	दो एकड़	4	8
4	तीन या उससे अधिक	6	12
	योग	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रवास करने वाले 80ः ऐसे व्यक्ति है जो भूमिहीन या 1 एकड़ भूमि वाले है। भूमिहीन होना भी प्रवास करने का एक बड़ा कारण है। मजदूरों का रोजगार की तलाश में प्रवास प्रायः दिल्ली, आगरा, जयपुर, नागपुर, बंबई, सूरत, लखनऊ, झांसी, इलाहाबाद, मेरठ, बरेली और जम्मू काश्मीर की ओर होता है।

यहां के श्रमिकों से साक्षात्कार के दौरान महत्वपूर्ण तथ्य सामने आये है :– यह लोग केवल सूखा या अकाल में ही पलायन नहीं करते वरन् अच्छी वर्षा में भी बाहर जाते है। ये प्रायः उत्तर भारत में ईटा–भट्टों तथा पश्चिम भारत में भवन निर्माण कार्य हेतु जाते है। भूमिहीन मजदूर अपने क्षेत्र की तुलना में बाहर जाकर काम करना पसंद करते है। जिससे उनका घूमना–फिरना बड़े शहरों को देखना तथा अधिक मजदूरी की प्राप्ति होती है। अपने क्षेत्र में इन्हें वर्ष भर काम नहीं मिलता सिंचाई की पर्याप्त सुविधा का अभाव, कृषि की दयनीय स्थिति, अशिक्षा गरीबी तथा मुंगेली क्षेत्र में बड़े उद्योगों का अभाव, लघु व कुटीर उद्योगो का पतन, अकाल, ऋणग्रस्तता आदि कारणों से इस क्षेत्र से पलायन होता है।

प्रवास से उत्पन्न समस्याएं :– कृषि मजदूरों का प्रवास अपने आप में एक गंभीर समस्या है। इससे जुड़ी अन्य समस्याएं जैसे :– श्रमिकों को बाहर ले जाकर बेचना, बाल–श्रमिक समस्या, आर्थिक शोषण, यौन शोषण तथा उससे उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याएं, शिक्षा की समस्या विशेष कर उन छोटे बच्चों की 4–5 वर्ष की उम्र से ही माता–पिता के साथ बाहर जाते है। वे स्कूल नहीं जा पाते।

यद्यपि अल्पकालिक प्रवास विभिन्न समस्याओं का परिणाम होता है लेकिन इसका सकारात्मक पक्ष भी है। बाहर जाकर ये मजदूर पहले से अधिक कुशल हो जाते है। अधिक धन की प्राप्ति भी होती है। आत्मनिर्भरता आती है तथा इसी बहाने देश–प्रदेश की जानकारी भी मिलती है।

निश्कर्श :–

मुंगेली नगर के उपांतीय ग्रामों के कृषि मजदूर वर्ष में 4 माह प्रवास पर रहते है। जिससे उनमें रोजगार प्राप्ति के साथ ही पर्यटन का भी प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। प्रवास यदि सकारात्मक है तो समस्या ही नहीं किन्तु दुखद पक्ष यह है कि उनका शोषण ही अधिक होता है। साथ ही स्वास्थ्यगत समस्याएं भी बढ़ती है। यद्यपि केन्द्र सरकार की मनरेगा योजना तथा राज्य सरकार सस्ती दर पर चांवल तथा अन्य ग्रामीण कल्याणकारी योजनाओं के लागू होने के कारण ग्रामीण उत्प्रवास में काफी कमी आई है। किन्तु यह समस्या का पूर्ण निदान नहीं है। इन्हें अपने ही क्षेत्र में लघु व कुटीर उद्योग की पुर्नस्थापना, कृषि की आधुनिक तकनीक तथा मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन, द्विफसल उत्पादन आदि के द्वारा मूल स्थान पर ही रोकना होगा। जिससे उनकी अगली पीढ़ी की समुचित शिक्षा हो सके तथा इन्हें भी सामाजिक संरक्षण तथा आर्थिक सुनिश्चितता मिलें।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.Mishra S.N. :- "Dynamics of rural-urban migration in India" Anmol Publication.

2.मौर्य , डॉ. एस.डी. :– ''सामाजिक भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

3.त्रिपाठी, डॉ. रामदेव :– ''जनसंख्या भूगोल'' वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।

4.शर्मा, सरला एवं गुप्ता एम.पी. :– ''छत्तीसगढ़ के अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास'' रायपुर जिले का प्रतीक अध्ययन, भू–विज्ञान 1997 जनवरी–जुलाई पेज 16–28।

5.दैनिक समाचार पत्र :– नवभारत, दैनिक भास्कर, हरिभूमि।

Please cite this Article as : *डॉ. श्रीमती मंजू पांडेय, ''मुंगेली नगरीय उपांत क्षेत्र में अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवास का अध्ययन''* **: Indian Streams Research Journal (April ; 2012)**